NEERAJ®

M.P.S.E.-5

अफ्रीका में राज्य और समाज

(State and Society in Africa)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Hemant Kumar

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

अफ्रीका में राज्य और समाज

(State and Society in Africa)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. अफ्रीका : एक परिचय (Africa: An Introduction) 1
2. औपनिवेशिक विरासतें (Colonial Legacies) 10
3. राष्ट्रवाद और उसकी विरासतें (Nationalism and its Legacies) 16
4. राज्यत्व की समस्याएं : एकीकरण तथा वैधीकरण 24
(Statehood Problems: Integration and Validation)
5. विकास के मुद्दे (Development Issues) 37
6. शासन पद्धतियों के प्रकार (The Types of Regimes) 45
7. प्रशासन, सेना और राजनीतिक दल 51
(Administration, Army and Political Parties)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. अफ्रीका और विश्व अर्थव्यवस्था (Africa and World Economy) 56

9. शीत युद्ध, गुटनिरपेक्षता तथा अफ्रीका (Cold War, Non-Alignment and Africa) 63

10. संयुक्त राष्ट्र शांति निर्वहन प्रक्रिया तथा अफ्रीका 75
(United Nations Peace-keeping Activities and Africa)

11. शीतयुद्धोत्तर अफ्रीका (Africa after Post-Cold War) 91

12. मानव सुरक्षा (Human Safety) 99

13. विप्रादेशीकरण और सामाजिक पहचान की समस्याएँ 104
(Problems of Social Identity and Deterritorialisation)

14. हिंसा और इसके विविध रूप (Violence and its Various Faces) 109

15. आर्थिक सहयोग : महाद्वीपीय और क्षेत्रीय 114
(Economic Cooperation: Continental and Regional)

16. भारत-अफ्रीका संबंध (Indo-Africa Relations) 120

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

अफ्रीका में राज्य और समाज

(State and Society in Africa)

M.P.S.E.-5

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रत्येक अनुभाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

अनुभाग-I

प्रश्न 1. अफ्रीका में द्वंद्वों तथा द्वंद्व प्रबंधन पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-93, 'अफ्रीका में संघर्ष' तथा 'संघर्ष प्रबंधन'

प्रश्न 2. सब-सहारन अफ्रीका में मानव सुरक्षा की स्थिति का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-102, 'उप-सहाराई अफ्रीका में मानव सुरक्षा' तथा पृष्ठ-103, प्रश्न 4

प्रश्न 3. अफ्रीका में जातीयता और राष्ट्रवाद का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-106, 'जातीयता और राष्ट्रवाद'

प्रश्न 4. अफ्रीका में प्रत्यक्ष हिंसा के मुद्दे की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-110, 'प्रत्यक्ष हिंसा' तथा पृष्ठ-112, प्रश्न 2

प्रश्न 5. दक्षिण अफ्रीका विकास समन्वय सम्मेलन (SADCC) क्या है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-116, 'दक्षिण अफ्रीका विकास समन्वय सम्मेलन (SADCC), पृष्ठ-119, प्रश्न 5

अनुभाग-II

प्रश्न 6. अफ्रीका में भारतीयों पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-120, 'परिचय', 'अफ्रीका में भारतीय'

प्रश्न 7. प्रारंभिक अफ्रीकी राज्यों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-29, प्रश्न 1

प्रश्न 8. अफ्रीका में उपनिवेशन के पैटर्न का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-11, 'उपनिवेशीकरण', 'उपनिवेशीकरण के प्रतिरूप'

प्रश्न 9. अफ्रीका में स्वतंत्रता आंदोलन के लक्षणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-20, 'अफ्रीका में स्वाधीनता आंदोलन'

प्रश्न 10. 'महान अफ्रीकी संकट' (The Great African Crisis) की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-39, 'अफ्रीका में भयावह संकट'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

अफ्रीका में राज्य और समाज

(State and Society in Africa)

M.P.S.E.-5

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. अफ्रीका में आर्थिक अविकसितता का एक सिंहावलोकन प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-62, प्रश्न 3, पृष्ठ-57, 'स्वाधीनता के उपरांत अफ्रीका का आर्थिक निष्पादन : एक विहंगम दृष्टि'

प्रश्न 2. अफ्रीका में शीत युद्ध के बाद शांति स्थापना की रूपरेखा का पता लगाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-83, प्रश्न 3

प्रश्न 3. अफ्रीका में संघर्ष और संघर्ष प्रबंधन पर एक निबंध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-93, 'अफ्रीका में संघर्ष' तथा 'संघर्ष प्रबंधन'

प्रश्न 4. उप-सहारा अफ्रीका में मानव सुरक्षा पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-102, 'उप सहाराई अफ्रीका में मानव सुरक्षा', पृष्ठ-103, प्रश्न 4

प्रश्न 5. अफ्रीका में विकेन्द्रीकरण और सामाजिक पहचान की समस्याओं के मुद्दे की जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-104, 'सामाजिक पहचान का वैचारिक आधार', पृष्ठ-107, प्रश्न 1, पृष्ठ-108, प्रश्न 2

भाग-II

प्रश्न 6. अफ्रीका में हिंसा और इसकी अभिव्यक्तियों के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-112, प्रश्न 1, प्रश्न 2 पृष्ठ-113, प्रश्न 3, प्रश्न 4

प्रश्न 7. उप-सहारा अफ्रीका में आर्थिक सहयोग के लिए महाद्वीपीय पहल का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-114, 'उपसहाराई अफ्रीका में महाद्वीपीय पहल : लैगोस कार्य योजना (LPA) अफ्रीकी संघ (AU)' तथा 'अफ्रीका के विकास के लिए नई भागीदारी (नेपैड)'

प्रश्न 8. भारत-अफ्रीका संबंधों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-121, 'स्वतंत्रता के पश्चात का युग', 'पिछले दशकों से संबंध', पृष्ठ-122, 'इक्कीसवीं शताब्दी में भारत-अफ्रीका संबंध'

प्रश्न 9. आधुनिक समय में अफ्रीका के राजनीतिक विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-54, प्रश्न 4, प्रश्न 5

प्रश्न 10. दास व्यापार पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-6, 'यूरोपीय प्रभाव' तथा 'दास व्यापार'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

अफ्रीका में राज्य और समाज
(STATE AND SOCIETY IN AFRICA)

अफ्रीका : एक परिचय
(Africa: An Introduction)

1

परिचय

अफ्रीका एशिया के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह एकमात्र महाद्वीप है, जिससे विषुवत रेखा, कर्क रेखा तथा मकर रेखा गुजरती हैं। यह महाद्वीप भौगोलिक रूप से विविधता भरा है। इस महाद्वीप पर कुल मिलाकर छोटे-बड़े 54 देश हैं। यह महाद्वीप जिब्राल्टर जलसंधि, भूमध्य सागर, स्वेज नहर, लाल सागर एवं अरब सागर द्वारा यूरेशिया से पृथक होता है अथवा इसकी सीमा निर्धारित होती है। अफ्रीका की भूमि मेज की भाँति ऊँची उठी हुई है तथा पहाड़ी है। अफ्रीका महादेश में लगभग 89 करोड़ लोग निवास करते हैं (2005 की जनगणना के अनुसार)। अफ्रीका महादेश मानव जाति के इतिहास एवं विविध संस्कृतियों का उत्स स्थल भी माना जाता है। यहाँ आज भी कुछ उच्च कोटि की जनजातियाँ निवास करती हैं। अफ्रीका के इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि वर्षों तक शोषण एवं उत्पीड़न के दौर से जूझने वाले इस भू-भाग का भारत की स्वतंत्रता के समय भी केवल कुछ अंश ही औपनिवेशिक वर्चस्व से मुक्त था। 1963 में अफ्रीकी एकता संगठन के पश्चात 32 देश स्वतंत्र हुए तथा अंततः 54 देश स्वतंत्र हुए। अतः अफ्रीका में स्वतंत्रता की कई लहरें चलीं, जिसके पश्चात वहां के विकास की रूपरेखा स्वतंत्र देश की भाँति संचालित होने लगी।

वस्तुतः आधुनिक युग में अफ्रीका विश्व के समक्ष 'अंध महाद्वीप' की अवधारणा को मिथ्या साबित करते हुए भूमंडलीकरण और विकास की प्रक्रिया में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस महाद्वीप में अनेक सरकारी एवं गैर-सरकारी क्षेत्रीय तथा आर्थिक सहयोग संगठन संचालित हैं, जिसमें 'अफ्रीकी एकता संघ' भी महत्त्वपूर्ण है जो अब 'अफ्रीकी संघ' के नाम से जाना जाता है। अफ्रीका महाद्वीप के विकास में इन संगठनों ने भरपूर सहयोग दिया है, मुख्यतः संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम एवं अफ्रीकी विकास की नई भागीदारी से इस उपमहाद्वीप के बेहतर भविष्य के निर्माण की प्रक्रिया को बल मिल रहा है। इस अध्याय में अफ्रीका महाद्वीप के अस्तित्व तथा अफ्रीका पर विभिन्न यूरोपीय औपनिवेशिक देशों द्वारा साम्राज्य स्थापना एवं उनसे अफ्रीका का संघर्ष आदि के पश्चात आधुनिक अफ्रीका के निर्माण की चर्चा की गई है।

अध्याय का विहंगावलोकन

अफ्रीका किस प्रकार अस्तित्व में आया?

अफ्रीका का इतिहास मानव इतिहास का गवाह है जो कि अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध रहा है। अफ्रीका के बारे में विशेषज्ञों के विचारों, सूचनाओं एवं जानकारियों के द्वारा अत्यधिक सहायता मिली। साथ ही विभिन्न पर्यटकों, व्यापारियों तथा आक्रमणकारियों एवं वहां के गुलाम बनाए गए दासों के आधार पर भी अफ्रीका का इतिहास लिखा गया। इसके अतिरिक्त इन सूचनाओं की पुष्टि के लिए नृवैज्ञानिकों, भू-सर्वेक्षकों तथा भाषाविदों के अनुसंधानों का भी अत्यधिक महत्त्व रहा है। अफ्रीका का इतिहास अभी भी पूर्ण नहीं है, चूंकि प्राचीन खोजों एवं रचनाओं से जानकारी तो मिलती है किंतु अफ्रीका के अतीत के अनेक पक्ष आज भी अछूते हैं, 'दास प्रथा' के काले युग का इतिहास भी अधूरा है। फिर भी अफ्रीका के अस्तित्व में आने की जानकारी के रूप में कई पक्ष सहायक हैं, जो निम्नलिखित हैं–

***(i)* भौगोलिक एवं समाजशास्त्रीय पक्ष**–अफ्रीका महाद्वीप में सभ्यता के आरंभ में पशुपालन प्रचलित था जो कि कृषि के पहले से था। मिस्र के पश्चिमी रेगिस्तानी क्षेत्र में लगभग 7500 ई.पू. पशुओं को पालतू बनाने के साक्ष्य मिलते हैं। परवर्ती 2000 वर्षों में पशुओं को पालतू बनाने की प्रथा का विस्तार सहारा मरुस्थल के अन्य क्षेत्रों में भी हुआ। अफ्रीका का अटलांटिक सागर का तटवर्ती क्षेत्र, जो इथियोपिया का ऊपरी क्षेत्र है तथा अन्य वन्य क्षेत्रों तक पशुपालन की प्रथा का विस्तार हुआ। अफ्रीका का सहारा क्षेत्र आरंभ में मरुस्थल नहीं था। मौसम में होने वाले परिवर्तनों के

www.neerajbooks.com

कारण यह क्षेत्र लगभग 6000 ई.पू. से मरुस्थल में परिवर्तित होने लगा तथा 4500 वर्षों के पश्चात अफ्रीका का एक विस्तृत क्षेत्र मरुस्थल में तब्दील हो गया।

सहारा की मरुभूमि में भी सभ्यताएं विकसित हुईं तथा अदम्य जिजीविषा के साथ कई प्रजातियों ने बस्तियों की स्थापना की। विभिन्न समुदायों ने कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं अवसरों पर आपस में संसाधनों एवं कौशलों का आदान-प्रदान किया तथा रेगिस्तान के कठिन जीवन में जीने की कला का विस्तार किया। इस प्रकार इन समुदायों ने रेगिस्तान में भी खाद्य पदार्थों को उपजाने का तरीका विकसित किया तथा जीवन को बचाए रखा। कृषकों के साक्ष्य से पूर्व पशुपालकों के साक्ष्य मिलते हैं, जिससे उनकी जीवनयापन पद्धति का पता चलता है। पशुपालकों में गड़रियों ने पूर्वी, मध्य तथा दक्षिणी अफ्रीका के क्षेत्रों में लगभग 2500 ई.पू. के बाद इस प्रथा को प्रसारित किया। ये गड़रिये 1000 ई.पू. में कीनिया, 400 ई.पू. मे तंजानिया तथा 200 ई.पू. में दक्षिणी अफ्रीका में पाए गए। इस प्रकार पशुपालकों को अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों में पाया गया। कृषि कार्य का आरंभ करने वाली जनजातियों में बांटू भाषी लोगों को अग्रणी माना जाता है। 1500 ई.पू. में बांटू भाषी लोग अफ्रीका के पूर्वी भाग से चलते हुए दक्षिणी अफ्रीका तक पहुँचे तथा इन समूहों ने अपने आप्रवास के काल में ही अनाज उगाना आरंभ कर दिया था। साथ ही बांटू भाषी लोगों को लौह उत्पादक के रूप में भी अग्रणी माना जाता है।

***(ii)* सामाजिक विकास में धातु का महत्त्व**–किसी भी समाज के विकास में परिवर्तन के साथ-साथ विभिन्न खनिजों एवं संपदाओं का उपयुक्त दोहन सहायक होता है। अफ्रीकी समाज में प्राचीन काल में धातुओं की खोज एवं उसका प्रयोग एक क्रांतिकारी कदम था। धातुओं के प्रयोग ने समाज में कई कार्यों को सुलभ बना दिया तथा एक क्रमिक व्यवस्था का जन्म हुआ जिसने पद सोपानीय समाज के गठन को प्रोत्साहित किया। नगरों के निर्माण, कृषि से व्यापार की ओर तक का सफर तथा जंगलों को काटकर सुदृढ़ ढाँचे की निर्मिति आदि धातु संपदा के प्रयोग से ही संभव हो सका।

विभिन्न धातुओं के प्रयोग के साक्ष्य भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में मिलते हैं, जिनके काल भी अलग-अलग हैं, जिससे इन धातुओं के विकास का पता चलता है। कांसे के गलाने का कार्य 2000 ई.पू. में मिस्र तथा न्यूबिया के लोग करते थे, उत्तरी अफ्रीका में लोहे तथा तांबे की प्रौद्योगिकी को 1000 ई.पू. के आस-पास यूनानी तथा कर्थेजीनियाई लोग लाए थे, जिसका प्रसार नील घाटी तक हुआ। इसी प्रकार नाइजर में सर्वेक्षण से पता चलता है कि उपसहारा अफ्रीका में 700 ई.पू. में लोहे का उत्पादन होता था। आधुनिक मॉरीटेनिया में लगभग 600 ई.पू. में तांबा गलाने का कार्य आरंभ हुआ। फलतः अफ्रीका में लौह धातु के प्रयोग से सभ्यता का विकास तीव्र गति से होने लगा। पश्चिमी अफ्रीकी क्षेत्रों में लोहे के औजारों से नदियों की घाटियों में भूमि को बस्तियों के निर्माण योग्य बनाया गया। चूंकि लोहे के औजार एवं लौह-प्रौद्योगिकी के विकास में बांटू निवासी अग्रणी थे, अतः इन कबीलों के लोगों के साथ-साथ इस कौशल का प्रसार अफ्रीका के पूर्वी, मध्य तथा दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों में भी हुआ। इसके साक्ष्य के रूप में दक्षिणी तंजानिया की विक्टोरिया झील के समीप लोहे की कलाकृतियाँ मिली हैं, जो 100 से 400 ई. के लगभग निर्मित हुई थीं।

फलतः अफ्रीका में 600 ई. तक कई शहर बस गए थे तथा उत्पादन, व्यापार आदि को महत्त्व प्राप्त हो चुका था। साथ ही समाज में एक पद-सोपानिक व्यवस्था का जन्म हो रहा था और अंततः 18वीं शताब्दी के अंत में अफ्रीका में अनेक शहर स्थापित हो चुके थे।

अफ्रीका का विकास

अफ्रीका के विकास का अफ्रीका के भौगोलिक विभाजन के पश्चात प्रधान रूप से अवलोकन कर सकते हैं।

उत्तरी अफ्रीका

अफ्रीका का उत्तरवर्ती क्षेत्र उत्तरी अफ्रीका कहलाता है जिसमें लीबिया, मिस्र, ट्यूनीसिया, अल्जीरिया, सूडान का उत्तरी क्षेत्र एवं मोरक्को का भू-भाग सम्मिलित है। उत्तरी अफ्रीका के विकास की रूपरेखा को वहां मिलने वाले औजारों की बदलती प्रकृति एवं प्रयुक्त संसाधनों के अवशेषों से स्पष्ट किया जा सकता है। पाषाण युग में लाल सागर के तटीय क्षेत्रों से लेकर अटलांटिक महासागर तक तथा भूमध्य सागर के तट से लेकर दक्षिण तक प्राचीन काल की कुल्हाड़ियां पाई गई हैं। अफ्रीका के रेगिस्तानी क्षेत्र में इन कुल्हाड़ियों के अवशेष पुरानी झीलों तथा झरनों के किनारों पर भी मिले हैं। उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका के सहारा तथा मगरिब क्षेत्रों में मिले अवशेषों से पता चलता है कि वहां मध्य पाषाण काल में लोग जिराफ, घोड़े, गैंडे, एंटेलोपों एवं मुर्गों का शिकार करते थे। पाषाण युग के लोग अनुमानतः वनस्पति भोजन को अधिक स्वादिष्ट बनाने हेतु पत्थरों की मशीनों अथवा चक्कियों से पीसने का कार्य भी करते थे।

उत्तरी अफ्रीका के लोग मछलियों का शिकार भी करते थे। मछली पकड़ने के सर्वाधिक प्राचीन प्रमाण नील नदी की घाटी से मिले हैं। वहां मछलियों के ढांचे तथा हड्डियां प्राप्त हुई हैं जिनमें कुछ गहरे पानी की मछलियाँ भी हैं, जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि लगभग 20,000 से 13,000 वर्ष पूर्व भूमध्य सागर का तटवर्ती क्षेत्र काफी नीचे रहा होगा तथा लोग वहीं निवास करते होंगे। चूंकि आज वह क्षेत्र जलमग्न है। नील नदी का तटीय क्षेत्र जलापूर्ति के लिए नील नदी पर निर्भर था तथा विभिन्न समुदाय संसाधनों पर अधिकार के लिए आपस में युद्ध करते होंगे। नील नदी के किनारे का प्रवास वर्ष भर नहीं होता होगा। किंतु जलवायु में परिवर्तन के कारण लगभग 11,000 वर्ष पूर्व यहां वर्षा होने से नील नदी का जलस्तर बढ़ा होगा, जिससे तटवर्ती क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि हुई तथा स्थायी मानव बस्तियाँ बनीं, कुएं खोदे गए, गोल घरों का निर्माण किया गया तथा पत्थर के गोलाकार स्तम्भ स्थापित किए गए जो संभवतः मौसम की जानकारी अथवा धार्मिक प्रक्रिया से संबद्ध हो सकते थे। तत्पश्चात मानव सभ्यता का विकास तीव्र गति से होने लगा। पुनः जलवायु में गंभीर परिवर्तन से सहारा का ज्यादातर क्षेत्र अत्यधिक गर्म रहने लगा, जिसके कारण वहां से मानवों का विस्थापन होने लगा।

अफ्रीका के क्षेत्र में जलवायु परिवर्तनों के बावजूद जीवनयापन के लिए लोग तरह-तरह के कौशल प्राप्त कर चुके थे। 3100 ई.पू. में मिस्र में एक राज्य का पता चलता है जिसके राजा को फराहो (Pharaohs) कहा जाता था तथा सूडान में एक बृहत कुश का पिरामिड नूरी नामक स्थान पर प्राप्त हुआ है। इससे पता चलता है

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

कि उत्तरी अफ्रीका में समाज का सुदृढ़ एवं व्यवस्थित रूप निर्मित हो चुका था। भूमध्य सागर के तट पर खुदाई में रोमन कब्रिस्तान प्राप्त हुए हैं, चूंकि यह क्षेत्र प्रथम शताब्दी में रोमनों के अधीन था। इस क्षेत्र में मिट्टी के ऐसे बर्तन भी प्राप्त हुए हैं जो भूमध्य सागरीय क्षेत्र में 500 सालों तक व्यापार की प्रधान वस्तु हुआ करती थी।

पश्चिमी अफ्रीका

पश्चिमी अफ्रीका का क्षेत्र उत्तर में सहारा मरुस्थल तक विस्तृत है। इसके अंतर्गत माली, नाइजर, नाइजीरिया, चाद, कैमरून, बेनिन, बुर्कीना फासो, टोगा, घाना, आइवरी कोस्ट, लाइबेरिया, सियेरा लियोन, गिनी, गिनी बिसाऊ, गैम्बिया, सेनेगल, मॉरीटेनिया शामिल हैं। पश्चिमी अफ्रीका के क्षेत्र में लगभग 2000 ई.पू. में कृषि में वृद्धि हुई तथा बस्तियों में निवास करने वाले लोगों द्वारा सवाना के विकास में सहायता प्राप्त हुई। उस समय तक लोगों ने धातुओं के औजारों के साथ-साथ धातुओं के विकास पर भी विशेष रूप से कार्य आरंभ कर दिया था। घाना तथा आइवरी कोस्ट में बड़ी बस्तियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जहां पाषाणकालीन औजार, बकरियों तथा भेड़ों के कंकाल एवं मिट्टी के बर्तन मिले हैं। धातुओं के विकास एवं प्रौद्योगिकी की तकनीक इस क्षेत्र के लोगों ने संभवत: उत्तरी अफ्रीका तथा सूडान से प्राप्त की होगी अथवा स्वयं विकास किया होगा। नाइजर के क्षेत्र से ऐसे कई प्रमाण मिले हैं, जिनसे पता चलता है कि वहां लोगों ने लगभग 2000 ई.पू. तांबे पर कार्य आरंभ कर दिया था। नाइजर से लोहे के 1000 ई.पू. के प्रमाण मिलते हैं। कालांतर में अफ्रीका में एक जटिल सामाजिक संरचना का विकास हुआ जो सातवीं शताब्दी से आरंभ हुआ। अरबों से संपर्क के पश्चात अफ्रीकी जन-जीवन में व्यापक परिवर्तन हुआ तथा नगरों का विकास हुआ। पश्चिमी अफ्रीका में मिट्टी के कई टीले प्राप्त हुए हैं जिनमें कब्रिस्तान, मानव बलि, शवाधान पद्धति आदि के संदर्भ में साक्ष्य मिलते हैं।

अरबों से संपर्क के पश्चात लिखित रूप में भी अनेक प्रमाण मिलते हैं। वैसे 1000 ई. के पश्चात अफ्रीका के समाज एवं राज्य की जानकारी स्पष्ट रूप से प्राप्त होती है। अरब विद्वानों तथा पर्यटकों के दस्तावेजों से पता चलता है कि घाना एक समृद्ध राज्य था तथा प्राचीन घाना की राजधानी आधुनिक मॉरीटेनिया में एक स्थान पर थी। साथ ही यूरोपीय एवं अरबी लेखों से पता चलता है कि नाइजीरिया का बेनिन राजतंत्र एक शक्तिशाली और प्रसिद्ध राज्य था जो कि 13वीं से 17वीं शताब्दी तक समृद्धि के चरम पर था। अफ्रीका का सर्वाधिक दारुण एवं हृदय विदारक दृश्य दासों का निर्मम व्यापार था, जोकि आधुनिक युग में समाप्त हुआ। अफ्रीकी देश व्यापार के लिए प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रहे हैं। इनका यूरोप, चीन, भारत से व्यापार काफी पहले से होता रहा है।

पूर्वी अफ्रीका

पूर्वी अफ्रीका का विशेष महत्त्व है। 1960 के दशक में लेकी परिवार द्वारा खोजे गए जीवाश्मों ने पूर्वी अफ्रीका के इतिहास को जीवित किया। पूर्वी अफ्रीका में मानव विकास की प्रक्रिया का अति प्राचीन रूप प्राप्त होता है। होमोसेपाइन्स के विकास को महत्त्व देते हुए ज्वाई झील के गादामोता को अफ्रीका के इतिहास में प्रमुख महत्त्व दिया गया है। यह क्षेत्र इथियोपिया में स्थित है। गादामोता के लोग काफी वर्ष पूर्व एक विशेष प्रकार की ज्वालामुखी चट्टानों का प्रयोग अपने औजार के निर्माण में करते थे। अत: पूर्वी अफ्रीका को मानव सभ्यता के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसका क्षेत्र जिबूती, इरीट्रिया, इथियोपिया, कीनिया, सोमालिया, तन्जानिया एवं युगांडा तक विस्तृत है।

पूर्वी अफ्रीका में 4000 से 5000 वर्ष पूर्व में ही पशुओं को पालतू बना लिया गया था। इन पशुओं में भेंड़, गाय, भैंसे तथा बकरियां प्रमुख थीं। प्राचीन इथियोपिया के ललीबेला गुफा में कृषि के सबसे प्राचीन संकेत प्राप्त हुए हैं। कृषि में फलियों, ज्वार तथा विशेष प्रकार के मटर की खेती के साथ-साथ गेहूँ, दाल एवं अंगूर की खेती के भी प्रमाण मिले हैं। 2500 से 1700 वर्ष पूर्व से लोहे का प्रयोग आरंभ हो चुका था तथा 500 ई. में कृषक लोहे के औजारों को कृषि कार्य में प्रयोग करने लगे थे।

पूर्वी अफ्रीका के जटिल जीवन जीने वाले समुदायों के प्राचीनतम साक्ष्य 800 ई. तक विकसित हिंद महासागर के निकटवर्ती क्षेत्रों में शहरों की स्थापना से मिले हैं। शहरों के निर्माण में भवनों को प्रमुख स्थान प्राप्त होता है। कुछ समुदायों द्वारा लकड़ी, चूने तथा सागरीय प्रवालों से भवन-निर्माण कार्य आरंभ कर दिया गया था। कहीं-कहीं सिक्के भी ढाले जाने लगे थे। साथ ही तटीय क्षेत्रों में इस्लाम धर्म का प्रसार आरंभ हो चुका था।

अफ्रीका में मानव सभ्यता के विकास को कालानुसार इस प्रकार दर्शाया जा सकता है–

7000 ई.पू.	–	सहारा में पशुपालन का विकास
2000 ई.पू.	–	शिकारी समाज के स्थान पर कृषि समाज का आरंभ
1000 ई.पू.	–	नाइजर में लोहे के प्रयोग का प्रमाण
500 ई.पू.	–	लाल सागर मार्ग से इथियोपिया के लोगों द्वारा अरबों से व्यापार
1400 ई.	–	यूरोपीय लोगों द्वारा अफ्रीका से व्यापार

केंद्रीय एवं दक्षिणी अफ्रीका

अफ्रीका का मध्य भाग तथा दक्षिणी भाग 'आधुनिक' मानव व्यवहार वाले होमोसेपियन्स का क्षेत्र रहा है। इस बृहत क्षेत्र के अंतर्गत निम्नलिखित देश सम्मिलित हैं–बोसवाना, अंगोला, बुरूंडी, केंद्रीय अफ्रीकी गणराज्य, कांगो का लोकतांत्रिक गणराज्य, भूमध्य रेखाई गिनी, गाबन, लेसोथो, मालावी, मोजाम्बिक, नामीबिया, कांगो गणतंत्र, रुआंडा, साओ टोम एवं प्रिंसीप, दक्षिण अफ्रीका, स्वाजीलैंड, जाम्बिया तथा जिम्बाब्वे। केंद्रीय तथा दक्षिणी अफ्रीका के अधिकतर निवासी उत्तर पाषाण काल में घुमक्कड़ थे। वे मौसम के अनुसार पर्वतीय प्रदेश तथा मैदानी इलाके में निवास करते थे। जीवन शिकार पर आधारित था, साथ ही कंदमूल का भी प्रयोग करते थे। जल संसाधनों में समुद्री सीपी आदि का प्रयोग कर लेते थे। इनकी शवाधान पद्धति विशिष्ट थी, शवों को दफनाया जाता था तथा उनके ऊपर निशानदेही के लिए शिलाओं पर तरह-तरह की आकृतियाँ बना दी जाती थीं।

वर्षा वाले क्षेत्रों में लोगों ने कृषि आरंभ कर दिया था, वे अनाज के उत्पादन के साथ-साथ पशुओं को भी पालते थे। गांव के लोगों आपस में वस्तु विनिमय द्वारा संबद्ध थे, जिसमें अनाज, मिट्टी के बर्तन, नमक तथा लोहे की वस्तुएं इत्यादि विनिमय की वस्तुएं थीं। कुछ गांवों में पत्थर के औजार प्राप्त हुए हैं, अत: ऐसा कहा जा सकता है कि कुछ गांवों का पाषाण काल के शिकारियों से भी संपर्क था।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

केंद्रीय तथा दक्षिणी अफ्रीकी समाज का स्पष्ट विवरण लगभग 1000 वर्ष ईसा से प्राप्त होता है। इस काल में कृषकों ने पर्वतीय क्षेत्रों में निवास आरंभ कर दिया था तथा पत्थर के भवनों का निर्माण किया। कृषक लोग पालतू पशुओं को विशेष महत्त्व देते थे किंतु जटिल सामाजिक संरचना का विकास केंद्रीय एवं दक्षिणी अफ्रीका में 12वीं शताब्दी तक आरंभ हुआ। इस प्रकार के समाजों वाले राज्य लिम्पोपो नदी तट पर मपुंगाब्वे तथा अन्य पर्वतीय क्षेत्रों में स्थापित थे। इन राज्यों के राजा अर्थव्यवस्था को संचालित करते थे तथा विभिन्न देशों से व्यापारिक संबंधों को स्थापित करते थे। केंद्रीय तथा दक्षिणी अफ्रीका के समृद्ध राज्यों से अरब का व्यापार होता था जिसमें अफ्रीका से सोने, हाथीदांत तथा पशुओं की खालों का आयात किया जाता था। इस प्रकार का व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली द्वारा होता था, जहां अफ्रीका को शीशे के मनके तथा सूती कपड़े दिए जाते थे। अरब देशों से व्यापार ने अफ्रीका को विश्वपटल पर प्रकट कर दिया था, अंततः 16वीं शताब्दी से यूरोपीय उपनिवेशवादी देशों का आगमन आरंभ हो गया।

प्रारंभिक अफ्रीकी राजतंत्र (राजघराने)

प्राचीन काल से ही अफ्रीका में अनेक ऐसे राजतंत्र स्थापित थे जो आरंभ में तो छोटी-छोटी जागीर के रूप में थे किंतु कुछ कालोपरांत इन्होंने शक्ति संचित कर ली तथा समृद्धशाली बन गए। हालांकि इनके संदर्भ में बहुत ही कम प्रमाण उपलब्ध हैं। राजा वंशानुगत आधार पर नियुक्त किया जाता था तथा जनता की भलाई के प्रति वचनबद्ध होता था। आरंभ में उनकी शक्तियां धार्मिक क्रियाओं तक सीमित थीं, किंतु परवर्ती समय में राजनीतिक तथा सामाजिक विकास के परिप्रेक्ष्य में वे धर्मनिरपेक्ष शक्तियों के रूप से स्थापित हो गए। पश्चिमी एशियाा के अयूबिड मिस्र के सौदागरों द्वारा 13वीं शताब्दी में मिस्र में ममलुक राजवंश की स्थापना की गई जिसने 16वीं शताब्दी तक सफलतापूर्वक शासन किया। इसके अतिरिक्त घाना का साम्राज्य भी विशाल रहा है, जिसे सोनिके मुखियाओं ने पश्चिमी सूडान में स्थापित किया था। यह राज्य 8वीं से 11वीं शताब्दी तक कायम रहा।

माली का साम्राज्य पश्चिमी देशों से व्यापार में सशक्त भूमिका का निर्वहन कर रहा था। ऐसी मान्यता है कि इस राज्य के मॅर्दिका शासकों ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया तथा इस्लाम का प्रसार किया किंतु वास्तव में माली में इस्लाम धर्म का विकास प्रसिद्ध राजा मंशा कंकान मूसा के शासनकाल में हुआ। वह एक शक्तिशाली शासक था, जिसने पश्चिमी सूडान, मध्य सूडान तथा दक्षिणी सहारा के अधिकांश भागों पर शासन स्थापित कर लिया था। 1324 ई. की उसकी तीर्थयात्रा से वापस लौटने पर मूसा ने इस्लाम धर्म पर आधारित प्रशासनिक संरचना को स्थापित किया।

गिनी शब्द का उत्स बर्बर से माना जाता है। गिनी के अंतर्गत 1400 ई. से पूर्व ही अनेक शासक वंशों की उत्पत्ति हो चुकी थी।

इसमें चार प्रमुख राजघराने थे–

(i) यूरोबा का राजघराना, जिसका क्षेत्र पश्चिमी नाइजीरिया था।

(ii) इदो राजतंत्र, जिसका क्षेत्र मध्य-पश्चिमी नाइजीरिया था।

(iii) अकान राजतंत्र, जिसका क्षेत्र मध्य घाना था।

(iv) वोलोफ राजतंत्र, जिसका क्षेत्र सेनेगल था।

उपर्युक्त राजघरानों में यूरोबा का प्रमुख स्थान रहा है जिसकी उत्पत्ति वहां की स्थानीय जातियों तथा मध्य सूडान के सांस्कृतिक संश्लेषण के परिणामस्वरूप मानी जाती है। इस राजतंत्र ने समृद्ध राज्य की स्थापना की। सांस्कृतिक उत्पादकता को बढ़ावा दिया तथा शहरी बस्तियों का निर्माण, हस्तकला कौशल के साथ-साथ जटिल प्रशासनिक व्यवस्था को प्रश्रय दिया। यूरोबा के राजतंत्र में केंद्रीकृत प्रवृत्तियां विद्यमान थीं। वे जातीय एवं धार्मिक एकीकरण की प्रक्रिया के तहत संपर्क में आते रहे और अंततः आयो साम्राज्य (1650-1810) में विलीन हो गए।

अफ्रीकी राजघराने की स्थापना का मूल आधार रीति-रिवाज, राजनीतिक तथा सैनिक नेतृत्व रहा है। अफ्रीका के पूर्वी, मध्य तथा दक्षिणी क्षेत्रों में अनेक राजतंत्रों का उदय हुआ, जिनमें से कुछ पर व्यापारिक प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है, जिनसे ये राजघराने निर्मित हुए। व्यापारिक प्रभाव वाले राजतंत्र में प्रमुख थे–शोना तथा मध्य दक्षिणी पठार के पड़ोसी राज्य, साथ ही 16वीं शताब्दी के बाद लूबा, लुंडा एवं कांगो, अंगोला प्रदेश के पड़ोसी राज्य भी थे। कुछ राजघराने में चरागाहों को लेकर अथवा आधिपत्य को लेकर संघर्ष का माहौल बना रहता था। इस प्रकार के राजतंत्रों में बांटू के राज्य, केप प्रांत आदि थे। दरअसल इन राज्यों में जातिगत भेद तो था किंतु यहां यूरोपीय एवं एशियाई पदसोपानिक व्यवस्था नहीं थी, चूंकि यहां पशुओं तथा फलों पर व्यक्तिगत अधिकार होता था, भूमि पर नहीं।

इस्लाम का विस्तार

इस्लाम धर्म का विस्तार अफ्रीका में लगभग 7वीं-8वीं शताब्दी में हुआ था। इस्लाम धर्म का उदय मक्का में लगभग 610 ई. में पैगम्बर मुहम्मद के काल में हुआ था। पैगम्बर मुहम्मद के पश्चात अरब व्यापारियों, आक्रमणकारियों तथा प्रवासी लोगों ने इस्लाम धर्म का प्रसार अफ्रीका के उत्तरी क्षेत्र में हॉर्न ऑफ अफ्रीका तथा सहारा मरुस्थल में किया। इस्लाम धर्म का अफ्रीका के सामाजिक जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इसके विस्तार को इस प्रकार देखा जा सकता है।

मिस्र, सूडान और इथियोपिया

अफ्रीका में सैनिक अभियान के दौरान अरबों ने साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास किया। इस प्रकार अरब संस्कृति एवं इस्लाम धर्म का प्रसार हुआ। मिस्र पर 639 ई. में 4000 अरब सैनिकों द्वारा आक्रमण किया गया। उस काल में मिस्र पर बिजेन्टाइन शासकों का अधिकार था, जिसे अरब सैनिकों ने अपदस्थ कर दिया तथा अरब अमीर सत्तारूढ़ हुआ। मिस्र पर आधिपत्य के उपरांत अरबों ने दक्षिण की ओर साम्राज्य विस्तार करना आरंभ किया। इस प्रकार उन्होंने नूबिया पर आक्रमण किया। नूबिया पर ईसाई आधिपत्य था, जिसने अरबों का डटकर मुकाबला किया तथा उनके अभियान को अवरुद्ध कर दिया। अंत में 651 ई. में मिस्र के अमीर ने नूबिया से शांति समझौता कर लिया, जो कि एक कूटनीतिक कदम था।

कालांतर में नूबिया में ईसाई शक्ति कमजोर पड़ने लगी तथा मिस्र के मुसलमान आकर वहां बसने लगे तथा अपने धर्म का प्रसार करने लगे, अंततः ईसाई साम्राज्य का पतन हो गया तथा ईसाई धर्म का स्थान इस्लाम ने ले लिया। इस्लाम के प्रभाव के बावजूद आज भी दक्षिण नूबिया में ईसाई धर्म का प्रमुख स्थान है तथा कई बार वहां सामुदायिक संघर्ष भी हो चुका है।

www.neerajbooks.com